International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

महात्मा गांधी की शैक्षिक दृष्टि और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ शिवेन्द्र सिंह चंदेल

असिस्टेंट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग, राठ महाविद्यालय पैठाणी पौड़ी गढ़वाल उत्तराखंड, भारत

Author Email: shivendra111singh@gmail.com

सारांश (Abstract)—इस शोध पत्र में महात्मा गांधी की शैक्षिक दृष्टि का मूल आधार आत्मनिर्भरता, नैतिकता और व्यवहारिक शिक्षा था। वे शिक्षा को केवल सूचनात्मक ज्ञान तक सीमित रखने के पक्षधर नहीं थे, बल्कि इसे जीवन उपयोगी बनाने पर जोर देते थे। उन्होंने बुनियादी शिक्षा (नयी तालीम) की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें श्रम आधारित शिक्षा को महत्व दिया गया। उनका मानना था कि शिक्षा केवल रोजगार के लिए नहीं, बल्कि समाज में एक सशक्त और जागरूक नागरिक के निर्माण के लिए होनी चाहिए। वे मातृभाषा में शिक्षा के समर्थक थे, ताकि बच्चे सहज रूप से ज्ञान अर्जित कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह नीति समग्र और व्यावसायिक शिक्षा पर बल देती है, जिससे विद्यार्थियों में कौशल विकास हो सके। गांधीवादी दृष्टिकोण की तरह, यह नीति भी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा देने की सिफारिश करती है और नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर जोर देती है। इसके अलावा, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल–आधारित प्रशिक्षण को विद्यालयी शिक्षा में समाहित करने की पहल गांधी जी की शिक्षा संबंधी अवधारणा से मेल खाती है।

हालांकि, आधुनिक तकनीकी युग में गांधीवादी शिक्षा को पूरी तरह लागू करना कठिन है। डिजिटल और तकनीकी शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण श्रम–आधारित शिक्षा का दायरा सीमित होता जा रहा है। फिर भी, आत्मनिर्भरता, नैतिक शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गांधीवादी शिक्षा के कई मूल तत्वों को आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया गया है। यदि इसे प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी और व्यावहारिक बना सकती है।

शब्दकोश (Keywords): महात्मा गांधी, शैक्षिक दृष्टि, बुनियादी शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, आत्मनिर्भरता, नैतिक शिक्षा, समग्र विकास।

I. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

शिक्षा किसी भी समाज की नींव होती है, जो न केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति का भी आधार है। भारत में, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि नैतिकता, आत्मनिर्भरता और समग्र विकास को प्रोत्साहित करना रहा है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को जीवन के हर पहलू से जोड़कर देखा और इसे समाज सुधार का प्रमुख साधन माना। उनकी शैक्षिक दृष्टि में नैतिकता, स्वावलंबन और व्यावहारिकता का विशेष स्थान था (सिंह, 2021)। वर्तमान में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार लाने का प्रयास कर रही है। इस शोध पत्र का उद्देश्य महात्मा गांधी की शैक्षिक दृष्टि और एनईपी 2020 के बीच संबंधों का समीक्षात्मक अध्ययन करना है (गुरुपंच, 2023)।

महात्मा गांधी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मनिर्भरता होना चाहिए। उन्होंने 1937 में 'बुनियादी शिक्षा' या 'नई तालीम' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें शिक्षा को श्रम से जोड़ने पर बल दिया गया। गांधी जी के अनुसार, शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान प्रदान करे, बल्कि

उन्हें स्वावलंबी और नैतिक बनाए (शर्मा और मिश्रा, 2023)। उन्होंने मातृभाषा में शिक्षा देने पर जोर दिया, जिससे बच्चे अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ सकें (गुप्ता, 2022)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जो 34 वर्षों के बाद लागू की गई, भारतीय शिक्षा प्रणाली में समग्र और बहुआयामी सुधार लाने का प्रयास करती है। यह नीति प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा के उपयोग, व्यावसायिक शिक्षा के समावेश, नैतिक और मूल्य–आधारित शिक्षा पर बल देती है (कुमार, 2021)। एनईपी 2020 का उद्देश्य विद्यार्थियों में 21वीं सदी के कौशल, जैसे– आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग और संचार कौशल का विकास करना है (वर्मा, 2022)। इसके साथ ही, यह नीति शिक्षा को अधिक समावेशी और समान बनाने का प्रयास करती है।

महात्मा गांधी की शैक्षिक दृष्टि और एनईपी 2020 के उद्देश्यों के बीच कई समानताएँ हैं। दोनों ही शिक्षा को नैतिकता, आत्मनिर्भरता और व्यावहारिकता से जोड़ते हैं (शर्मा, 2023)। गांधी जी की 'नई तालीम' में जहाँ शिक्षा को श्रम से जोड़ने पर बल दिया गया, वहीं एनईपी 2020 में व्यावसायिक शिक्षा के समावेश का प्रस्ताव है (पांडेय, 2021)। इसके अलावा, दोनों ही मातृभाषा में शिक्षा के महत्व को स्वीकारते हैं (चौधरी, 2022)।

हालांकि, वर्तमान समय में गांधीवादी शिक्षा दृष्टिकोण को पूर्णतः लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के इस युग में, शिक्षा के नए आयाम उभर रहे हैं, जो पारंपरिक दृष्टिकोण से भिन्न हैं। फिर भी, गांधी जी के सिद्धांत, जैसे– नैतिकता, आत्मनिर्भरता और व्यावहारिकता, आज भी प्रासंगिक हैं और एनईपी 2020 में इनका समावेश देखा जा सकता है (मिश्रा, 2023)।

इस शोध पत्र में महात्मा गांधी की शैक्षिक दृष्टि और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि कैसे गांधीवादी सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित किया जा सकता है और वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उनकी प्रासंगिकता क्या है।

II. गांधी जी की शिक्षा संबंधी अवधारणा

गांधी जी ने शिक्षा को जीवन का अनिवार्य अंग माना और इसे आत्मनिर्भरता, नैतिकता और व्यावहारिकता से जोड़ा। उनकी शैक्षिक दृष्टि में निम्नलिखित प्रमुख तत्व शामिल थेः

1. नई तालीम (बेसिक एजुकेशन) गांधी जी ने 1937 में 'नई तालीम' की संकल्पना प्रस्तुत की। इसके तहत उन्होंने शिक्षा को श्रम से जोड़ने की वकालत की। उनका मानना था कि बच्चे की शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित न हो, बल्कि उसे किसी न किसी शारीरिक कार्य से जोड़ा जाना चाहिए। इससे शिक्षा अधिक व्यावहारिक और उत्पादक बन सकेगी। नई तालीम के अंतर्गत कृषि, हस्तशिल्प, कताई–बुनाई आदि को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया गया।
2. मातृभाषा में शिक्षा गांधी जी ने प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने पर विशेष जोर दिया। उनका मानना था कि किसी भी बच्चे के लिए उसकी मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करना आसान और प्रभावी होता है। अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के बावजूद उन्होंने भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देने की वकालत की।
3. श्रम पर आधारित शिक्षा गांधी जी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के लिए उपयोगी बनना भी है। उन्होंने शिक्षा को व्यावहारिक बनाया और कहा कि विद्यार्थियों को ऐसे कौशल सिखाए जाने चाहिए जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। इस दृष्टिकोण से उन्होंने हस्तशिल्प, कृषि और अन्य व्यावसायिक कार्यों को शिक्षा का हिस्सा बनाने की बात कही।
4. नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा गांधी जी का विचार था कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का साधन भी होनी चाहिए। उनके अनुसार, शिक्षा को सत्य, अहिंसा, अनुशासन और करुणा जैसे नैतिक मूल्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

5. सर्वांगीण विकास की शिक्षा गांधी जी की शिक्षा पद्धति का लक्ष्य केवल विद्यार्थियों को नौकरी के योग्य बनाना नहीं था, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी और समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनाना था। उनका विश्वास था कि शिक्षा से व्यक्ति में आत्म–विश्लेषण, आत्म–नियंत्रण और आत्म–संयम की भावना विकसित होनी चाहिए।

III. गांधी जी की शिक्षा नीति का प्रभाव

महात्मा गांधी की शिक्षा नीति का प्रभाव न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में देखा गया। उनके विचारों ने शिक्षा में व्यावहारिकता और नैतिकता के महत्व को रेखांकित किया। आज भी उनकी शिक्षा संबंधी अवधारणाएँ प्रासंगिक बनी हुई हैं।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और गांधीवादी शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कई ऐसे तत्व शामिल किए गए हैं जो गांधीवादी शिक्षा से मेल खाते हैं। उदाहरण के लिए:
   - मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान
   - व्यावसायिक शिक्षा पर बल
   - नैतिकता और मूल्यों को शिक्षा का हिस्सा बनाना
   - बहु–विषयक और व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा देना
2. कला और हस्तशिल्प पर बल गांधी जी की शिक्षा नीति में कला, शिल्प और हस्तकला का विशेष स्थान था। वर्तमान समय में भी 'स्किल बेस्ड लर्निंग' और 'वोकेशनल एजुकेशन' को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो गांधीवादी शिक्षा से प्रभावित है।
3. गांधीवादी शिक्षा और आधुनिक भारत आज के तकनीकी और औद्योगिक युग में गांधी जी की शिक्षा पद्धति को पुनः अपनाने की आवश्यकता है। 'नई तालीम' की अवधारणा को अगर आधुनिक तकनीक और डिजिटल शिक्षा के साथ जोड़ा जाए, तो यह शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी बना सकती है।

IV. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताएँ

1. नई शिक्षा संरचना (5+3+3+4 मॉडल)

पुरानी 10+2 प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 संरचना अपनाई गई है।

- फाउंडेशनल स्टेज (5 वर्ष): 3 वर्ष की प्री–प्राइमरी. कक्षा 1 और 2
- प्रिपरेटरी स्टेज (3 वर्ष): कक्षा 3 से 5
- मिडिल स्टेज (3 वर्ष): कक्षा 6 से 8
- सेकेंडरी स्टेज (4 वर्ष): कक्षा 9 से 12 इस बदलाव का उद्देश्य समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करना और सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक व व्यावहारिक बनाना है।

2. मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा

छम्च 2020 के अनुसार, कक्षा 5 (और आवश्यकतानुसार कक्षा 8) तक शिक्षा मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में दी जानी चाहिए। इससे बच्चों की सीखने की क्षमता में वृद्धि होगी और वे अवधारणाओं को बेहतर समझ पाएंगे।

3. कौशल आधारित शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण

कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। छात्रों को हस्तशिल्प, कोडिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि, बढ़ईगिरी आदि का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा।

4. लचीली विषय संरचना

अब छात्रों को विज्ञान, वाणिज्य और कला के विषयों के बीच स्वतंत्रता दी गई है। वे अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकते हैं। इससे एक बहु–विषयक (Multidisciplinary) शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा मिलेगा।

5. मूल्यांकन प्रणाली में सुधार

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी और व्यापक बनाने के लिए 360–डिग्री होलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड (Holistic Report Card) की अवधारणा लाई गई है। अब छात्रों का मूल्यांकन केवल अंकों के आधार पर नहीं, बल्कि उनके समग्र प्रदर्शन, रचनात्मकता और व्यावहारिक कौशल के आधार पर किया जाएगा।

6. उच्च शिक्षा में सुधार और प्रवेश परीक्षा (CUET)

- सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को 2040 तक बहु–विषयक संस्थान बनाने का लक्ष्य रखा गया है।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (न्ळब) के तहत एक नया उच्च शिक्षा आयोग (भ्म्ब्) स्थापित किया जाएगा।
- केंद्रीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (CUET) लागू किया गया है।

7. डिजिटल शिक्षा का प्रोत्साहन

COVID–19 महामारी के बाद ऑनलाइन शिक्षा की महत्ता को देखते हुए डिजिटल लर्निंग को बढ़ावा दिया गया है। इसके तहतः

- राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा प्रणाली (National Digital Education Architecture & NDEAR) विकसित की गई है।
- एक डिजिटल विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी।
- शिक्षकों और छात्रों के लिए ई–सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

8. शिक्षक प्रशिक्षण और विकास

शिक्षकों की योग्यता और प्रशिक्षण प्रणाली को मजबूत करने के लिएः

- 4 वर्षीय इंटीग्रेटेड B.Ed. कोर्स अनिवार्य किया गया है।
- शिक्षकों की भर्ती और पदोन्नति के लिए कठोर मानक तय किए गए हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण में डिजिटल टूल्स और प्रौद्योगिकी को अधिक समावेशी बनाया गया है।

9. राष्ट्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी मंच (NETF)

यह एक डिजिटल प्लेटफॉर्म होगा, जो शिक्षकों और छात्रों को नवीनतम तकनीकी उपकरणों और संसाधनों की जानकारी देगा। इससे शिक्षा प्रणाली को डिजिटल रूप से सशक्त बनाया जाएगा।

10. अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा

राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (National Research Foundation & NRF) की स्थापना की जाएगी, जिससे अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जा सके और वैज्ञानिक खोजों को बढ़ावा दिया जाए।

11. बहु–विषयक संस्थानों का निर्माण

अब उच्च शिक्षण संस्थान केवल एक विषय तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि उन्हें बहु–विषयक बनाया जाएगा। इस नीति के तहत 2040 तक सभी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को बहु–विषयक शिक्षा प्रणाली अपनाने का निर्देश दिया गया है।

12. राष्ट्रीय क्रेडिट बैंक प्रणाली (Academic Bank of Credit & ABC)

छात्रों को उनकी शिक्षा यात्रा में लचीलापन प्रदान करने के लिए क्रेडिट ट्रांसफर की सुविधा दी जाएगी। इससे छात्र एक कोर्स से दूसरे कोर्स में आसानी से स्थानांतरित हो सकते हैं।

13. समावेशी और समतामूलक शिक्षा

NEP 2020 ने समाज के सभी वर्गों के लिए समान शिक्षा अवसर प्रदान करने पर जोर दिया है। विशेष रूप से:

- अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST), पिछड़ा वर्ग और दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष छात्रवृत्तियों का प्रावधान किया गया है।
- शिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए 'जेंडर इंक्लूजन फंड' की स्थापना की गई है।

14. शिक्षण संस्थानों की स्वायत्तता

अब कॉलेजों को अधिक स्वायत्तता दी जाएगी और उन्हें विश्वविद्यालयों से संबद्धता के बजाय स्वतंत्र संस्थान के रूप में कार्य करने की अनुमति होगी।

15. बाल विकास और प्रारंभिक शिक्षा

- 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) पर जोर दिया गया है।
- आंगनवाड़ी केंद्रों को मजबूत किया जाएगा।
- NIPUN भारत कार्यक्रम के तहत बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर ध्यान दिया जाएगा।

V. गांधीवादी शिक्षा दृष्टिकोण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का तुलनात्मक अध्ययन

गांधीवादी शिक्षा दृष्टिकोण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच कई महत्वपूर्ण समानताएँ और भिन्नताएँ हैं। इन दोनों को समेकित रूप से निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. शिक्षा का उद्देश्य

- गांधीवादी दृष्टिकोण शिक्षा को केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, नैतिकता और व्यावहारिक ज्ञान विकसित करने का साधन मानता था। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाती है।
- वहीं, NEP 2020 का उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, कौशल–आधारित और बहु–विषयक बनाना है, जिससे विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया जा सके। यह रोजगारपरक और तकनीकी दक्षता को भी प्राथमिकता देती है।

2. भाषा नीति

- गांधी जी शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करने के पक्षधर थे और अंग्रेजी को अनावश्यक रूप से थोपने के विरुद्ध थे। वे मानते थे कि मातृभाषा में शिक्षा से बच्चों की बौद्धिक और सांस्कृतिक उन्नति बेहतर होती है।
- NEP 2020 भी मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा को प्राथमिकता देती है, लेकिन इसे अनिवार्य नहीं बनाती, जिससे आधुनिक भाषाओं और वैश्विक संचार को भी महत्व मिल सके।

3. व्यावसायिक और श्रम आधारित शिक्षा

- गांधीवादी शिक्षा प्रणाली में श्रम का विशेष महत्व था, जिसमें कताई, बुनाई, हस्तशिल्प और कृषि को शिक्षा का अनिवार्य भाग बनाया गया था। यह शिक्षा को आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वावलंबन से जोड़ता था।
- NEP 2020 के तहत, कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, जिससे छात्रों को भविष्य के रोजगार अवसरों के लिए तैयार किया जा सके। इसमें नई तकनीकों और डिजिटल कौशल पर अधिक जोर दिया गया है।

4 मूल्यांकन प्रणाली

- गांधी जी की शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और आचरण को अधिक महत्व दिया गया था और परीक्षा प्रणाली को कम प्राथमिकता दी गई थी। वे मानते थे कि शिक्षा का मूल्यांकन केवल परीक्षा के आधार पर नहीं होना चाहिए, बल्कि नैतिक और व्यवहारिक मूल्यों के अनुसार भी होना चाहिए।
- NEP 2020 में 360–डिग्री मूल्यांकन प्रणाली को अपनाया गया है, जो छात्रों के समग्र विकास पर केंद्रित है। इसमें पारंपरिक परीक्षा प्रणाली को सुधारकर व्यावहारिक और अवधारणात्मक ज्ञान पर जोर दिया गया है।

5. शिक्षकों की भूमिका

- गांधीवादी दृष्टिकोण में शिक्षक को एक नैतिक गुरु के रूप में देखा गया, जो छात्रों को सत्य, अहिंसा और आत्मनिर्भरता के सिद्धांत सिखाता है। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पढ़ाने तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे समाज के मार्गदर्शक भी थे।
- NEP 2020 शिक्षकों के प्रशिक्षण और उनके पेशेवर विकास पर विशेष बल देती है और डिजिटल संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। इसमें शिक्षकों की दक्षता और गुणवत्ता सुधारने के लिए एक विशेष ढांचा तैयार किया गया है।

6. तकनीकी और डिजिटल शिक्षा

- गांधीवादी शिक्षा प्रणाली तकनीकी शिक्षा को विशेष महत्व नहीं देती थी, बल्कि पारंपरिक और शारीरिक श्रम–आधारित शिक्षा पर बल देती थी। वे मानते थे कि तकनीक व्यक्ति को मशीनों पर निर्भर बना सकती है और आत्मनिर्भरता को बाधित कर सकती है।
- NEP 2020 डिजिटल शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देती है, जिससे आधुनिक तकनीक के माध्यम से शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया जा सके। इसमें ऑनलाइन शिक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल लर्निंग प्लेटफार्म को भी शामिल किया गया है।

7. समग्र शिक्षा दृष्टिकोण

- गांधीवादी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल अकादमिक उपलब्धि नहीं, बल्कि नैतिकता, समाज सेवा और श्रम के प्रति सम्मान को विकसित करना था। शिक्षा का केंद्र केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता था।
- NEP 2020 में बहु–विषयक और समग्र शिक्षा पर बल दिया गया है, जिससे छात्र विभिन्न क्षेत्रों में दक्ष बन सकें। इसमें लचीले पाठ्यक्रम, कला, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के समावेशन को भी प्राथमिकता दी गई है।

8. शिक्षा का व्यावहारिक उपयोग

- गांधीवादी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य शिक्षा को व्यावहारिक बनाना था, जिससे विद्यार्थी केवल पढ़ाई तक सीमित न रहें, बल्कि अपने कौशल का उपयोग करके आत्मनिर्भर बनें। उनके विचार में शिक्षा का उपयोग समाज की सेवा के लिए होना चाहिए।
- NEP 2020 में भी व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है, लेकिन यह मुख्य रूप से तकनीकी और डिजिटल कौशल पर केंद्रित है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था के अनुरूप हो।

VI. गांधीवादी शिक्षा की प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ

1. गांधीवादी शिक्षा की प्रासंगिकता

गांधीजी की शिक्षा प्रणाली को आज भी कई रूपों में लागू किया जा सकता है। उनका दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए एक नैतिक और व्यावहारिक आधार प्रदान कर सकता है।

1. आत्मनिर्भरता पर बल

गांधीवादी शिक्षा प्रणाली में बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) को आत्मनिर्भरता से जोड़ा गया था। उनका मानना था कि शिक्षा को इस प्रकार विकसित किया जाए कि प्रत्येक व्यक्ति अपने हाथों से कार्य करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। वर्तमान समय में कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा के बढ़ते महत्व को देखते हुए, गांधीवादी शिक्षा दृष्टिकोण पहले से अधिक प्रासंगिक हो गया है।

2. नैतिकता एवं मूल्य आधारित शिक्षा

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। प्रतिस्पर्धा, करियर उन्नति और भौतिक सुख–सुविधाओं की होड़ में नैतिक शिक्षा उपेक्षित हो गई है। गांधीवादी शिक्षा नैतिक मूल्यों, सत्य, अहिंसा और समाज सेवा पर बल देती है, जो आज के सामाजिक ताने–बाने को सुदृढ़ कर सकती है।

3. व्यावहारिक एवं शारीरिक श्रम का महत्व

गांधीजी शिक्षा को पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं मानते थे। उनका मानना था कि बच्चों को कक्षा में बैठकर सिर्फ पढ़ाने के बजाय उन्हें व्यावहारिक कार्यों में भी संलग्न करना चाहिए। आज के युग में व्यावसायिक शिक्षा और स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए यह दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

4. संपूर्ण व्यक्तित्व विकास

आज की शिक्षा प्रणाली में छात्रों का बौद्धिक विकास तो हो रहा है, लेकिन नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास गौण हो गया है। गांधीवादी शिक्षा इन सभी पहलुओं को संतुलित करती है और व्यक्ति को एक संपूर्ण इंसान बनाने पर ध्यान केंद्रित करती है।

5. मातृभाषा में शिक्षा

गांधीजी का मानना था कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी सहज रूप से सीख सकें और अपने ज्ञान का बेहतर उपयोग कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा में शिक्षा पर बल दिया गया है, जिससे गांधीवादी शिक्षा दृष्टिकोण की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है।

2. गांधीवादी शिक्षा के समक्ष चुनौतियाँ

वर्तमान समय में गांधीवादी शिक्षा प्रणाली को लागू करने में कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैश्वीकरण, तकनीकी उन्नति और बदलते सामाजिक–आर्थिक संदर्भों में ढल चुकी है, जिससे गांधीवादी शिक्षा प्रणाली के समक्ष अनेक बाधाएँ खड़ी होती हैं।

1. **तकनीकी और डिजिटल शिक्षा का बढ़ता प्रभाव**

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली तेजी से डिजिटल होती जा रही है। ऑनलाइन शिक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स जैसी नई तकनीकों के कारण गांधीजी की श्रम आधारित शिक्षा प्रणाली को अपनाना कठिन होता जा रहा है।

2. **उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान की बढ़ती माँग**

गांधीजी की शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिक ज्ञान पर जोर था, लेकिन आधुनिक समय में उच्च शिक्षा और अनुसंधान की आवश्यकता अत्यधिक बढ़ गई है। वैज्ञानिक प्रगति, चिकित्सा, अंतरिक्ष अनुसंधान और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में गांधीवादी शिक्षा मॉडल को सीधे लागू कर पाना मुश्किल है।

3. **श्रम आधारित शिक्षा के प्रति उदासीनता**

समाज में शारीरिक श्रम को अभी भी निम्न वर्ग के कार्य के रूप में देखा जाता है। विद्यार्थी और अभिभावक शिक्षा को केवल श्वेत कॉलर नौकरियों (White Collar Jobs) से जोड़कर देखते हैं। गांधीजी के ''श्रम के सम्मान'' के विचार को लागू करना वर्तमान समय में एक बड़ी चुनौती है।

4. **वैश्वीकरण एवं प्रतिस्पर्धा का दबाव**

वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण विद्यार्थी और माता–पिता व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को अधिक महत्व देने लगे हैं। गांधीवादी शिक्षा प्रणाली, जो मूल्यों और आत्मनिर्भरता पर अधिक केंद्रित है, इस प्रतिस्पर्धी दौर में अपेक्षाकृत कम प्राथमिकता प्राप्त कर रही है।

5. **व्यावसायिक और वित्तीय दृष्टिकोण**

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का एक प्रमुख उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना है, जिससे व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्षम बन सके। गांधीवादी शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से आत्मनिर्भरता पर आधारित थी, लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में वित्तीय सुरक्षा और वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा के लिए अलग तरह की शिक्षा की आवश्यकता होती है।

6. **शहरीकरण और औद्योगीकरण का प्रभाव**

गांधीजी की शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से ग्रामीण विकास और छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने पर केंद्रित थी। आज का समाज शहरीकरण और औद्योगीकरण की ओर तेजी से बढ़ रहा है, जिससे उनकी शिक्षा नीति को संपूर्ण रूप से लागू कर पाना कठिन हो गया है।

7. **सरकारी नीतियाँ और संसाधन**

गांधीवादी शिक्षा प्रणाली को लागू करने के लिए पर्याप्त सरकारी समर्थन और संसाधनों की आवश्यकता है। लेकिन वर्तमान शिक्षा नीतियाँ मुख्य रूप से तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं, जिससे गांधीवादी शिक्षा प्रणाली को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाता।

VII. निष्कर्ष (Conclusion)

गांधीवादी शिक्षा दृष्टिकोण और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच कई महत्वपूर्ण समानताएँ और भिन्नताएँ हैं। गांधीजी की शिक्षा प्रणाली आत्मनिर्भरता, नैतिकता, श्रम आधारित शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षण और संपूर्ण व्यक्तित्व विकास पर आधारित थी। वहीं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसी आधुनिक नीतियाँ व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल शिक्षण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं।

आज के दौर में गांधीवादी शिक्षा की प्रासंगिकता बनी हुई है, क्योंकि यह केवल ज्ञान के हस्तांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सामाजिक, नैतिक और आर्थिक विकास को भी सुनिश्चित करती है। आत्मनिर्भरता, नैतिकता और व्यावहारिक शिक्षा के सिद्धांत आज भी शिक्षा व्यवस्था के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

हालाँकि, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और बदलते सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य के कारण गांधीवादी शिक्षा के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं। डिजिटल शिक्षा, प्रतिस्पर्धात्मक माहौल, शहरीकरण और वैज्ञानिक अनुसंधान की बढ़ती माँग ने शिक्षा के स्वरूप को बदल दिया है, जिससे गांधीवादी मॉडल को संपूर्ण रूप से लागू कर पाना कठिन हो गया है।

इसलिए, यह आवश्यक है कि हम गांधीवादी शिक्षा के मूल तत्वों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करें। नैतिक शिक्षा, श्रम के प्रति सम्मान, मातृभाषा में शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान को मौजूदा शिक्षा नीतियों में अधिक समाविष्ट किया जाना चाहिए। यदि हम गांधीवादी आदर्शों को आधुनिक जरूरतों के साथ संतुलित कर सकें, तो एक समग्र, नैतिक और आत्मनिर्भर शिक्षा प्रणाली का निर्माण संभव होगा, जो न केवल विद्यार्थियों को योग्य बनाएगी, बल्कि समाज और राष्ट्र के सतत विकास में भी योगदान देगी।

संदर्भ सूची

1. सिंह, डॉ. स्मिता. (2021). ''गाँधी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020.'' International Journal of Advanced Research in Multidisciplinary Sciences, 4(1), 143–146. स्पदा
2. गुरुपंच, कुबेर सिंह. (2023). ''महात्मा गांधी जी के शिक्षा संबंधी विचार का विश्लेषण.'' International Journal of Advances in Social Sciences, 11(4), 226–229. स्पदा
3. शर्मा, गौरव, और डी.पी. मिश्रा. (2023). ''उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतदृष्टि.'' Humanities and Development, 18(1), 132–137. स्पदा
4. गुप्ता, डॉ. प्रवीण कुमार. (2022). ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020: 21वीं सदी में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के विशेष संदर्भ में.'' AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science, 3(7), 1–6. स्पदा
5. कुमार, अजय. (2021). ''महात्मा गांधी की शैक्षिक दृष्टि और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक तुलनात्मक अध्ययन.'' शिक्षा विमर्श, 12(2), 45–52.
6. वर्मा, सुमन. (2022). ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गांधीवादी सिद्धांतों का समावेश.'' भारतीय शिक्षा समीक्षा, 58(3), 33–40.
7. शर्मा, रितु. (2023). ''महात्मा गांधी की शिक्षा संबंधी विचारधारा और उसकी वर्तमान प्रासंगिकता.'' समाज विज्ञान शोध पत्रिका, 29(1), 112–119.
8. पांडेय, नीरज. (2021). ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: गांधीवादी दृष्टिकोण से एक विश्लेषण.'' शोध दर्पण, 15(4), 27–34.
9. चौधरी, अनिल. (2022). ''गांधी जी की बुनियादी शिक्षा और एनईपी 2020: एक अध्ययन.'' शिक्षा संवाद, 9(2), 58–65.
10. मिश्रा, प्रिया. (2023). ''महात्मा गांधी की शैक्षिक दृष्टि का आधुनिक शिक्षा प्रणाली में महत्व.'' शोध समीक्षा, 20(3), 89–96.
11. सिंह, अनीता. (2023). ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव.'' Educational Research Journal, 5(2), 67–74.
12. यादव, रोहित. (2022). ''शिक्षा में गांधीवादी मूल्यों की भूमिका.'' Journal of Indian Education, 39(4), 99–105.
13. चौहान, सीमा. (2021). ''गांधीवादी शिक्षा और 21वीं सदी में उसकी प्रासंगिकता.'' Shiksha Samiksha, 14(1), 45–53.
14. पांडे, विवेक. (2023). ''नई शिक्षा नीति और महात्मा गांधी के विचार: एक तुलनात्मक अध्ययन.'' Educational Insights, 7(1), 39–47.

15. वर्मा, आर.के. (2023). ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और गांधीवादी शिक्षा की चुनौतियाँ.'' Indian Journal of Social Science, 22(2), 113–120.
16. गुप्ता, मनोज. (2022). ''शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण और आत्मनिर्भरता.'' International Journal of Educational Research, 16(3), 77–85.
17. मेहता, दीपक. (2023). ''शिक्षा नीति और समाजः ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य.'' Journal of Education & Society, 10(2), 88–95.
18. त्रिपाठी, सुरेश. (2021). ''महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का पुनरावलोकन.'' Gandhian Studies Review, 25(4), 134–141.